विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। –रामदास

हिंदी फिल्में सिनेमाघरों के पर्दे पर कम, ओटीटी पर अधिक

इक्कीसवीं सदी के पहले दो दशकों में हिंदी सिनेमा व्यवसाय एक बड़े बदलाव से गुज़रा है, जिसमें भव्य थिएट्रिकल रिलीज़ तथा बड़े स्तर वाली फिल्मों का पारंपरिक मॉडल ध्वस्त हो रहा है। ओटीटी प्लेटफॉर्म का नया वितरण और प्रदर्शन तंत्र सिनेमाघरों की एक सदी से अधिक की प्रभुता को चुनौती देते हुए फिल्मों के भविष्य का फैसला करने लगे हैं। कोविड-19 महामारी ने इस बदलाव की गति को तेज किया, पर इसकी नींव पहले ही पड़ चुकी थी, जब संचार तकनीक ने लोक मनोरंजन के नये विकल्प देकर सिनेमा से मनोरंजन का एकमात्र साधन होने का खिताब छीन लिया। फिल्म निर्माण की अर्थव्यवस्था और भारत के डिजिटल ढांचे की तेजी से बढ़ती पहुंच ने मिलकर एक नई दिशा तय की। अब, हिंदी फिल्मों की थिएटर रिलीज़ में गिरावट और उनके ओटीटी पर सीधे रिलीज़ के बढ़ते चलन से मनोरंजन जगत का चरित्र भी तेजी से बदल रहा है। फिल्मों के भविष्य का फैसला अब सिनेमाघरों का बॉक्स ऑफिस नहीं करता। चतुर व्यवसायी अपने फिल्म की लागत उसकी रिलीज़ से पहले ही ओटीटी प्लेटफार्मों से निकाल लेते हैं। पहले फिल्म की आय सिर्फ टिकटों की बिक्री से होती थी। इसके अलावा फिल्म के गानों की रिकॉर्डों की बिक्री तथा रेडियो पर उनके प्रसारण से होने वाली रॉयल्टी भी निर्माता पाता था क्योंकि संगीत पर पूरा उसी का कॉपीराइट होता था। हालांकि बाद में गायक, संगीतकार और गीतकार को भी इस रॉयल्टी में हिस्सा मिलने लगा। अब तो अनेक फिल्में सिर्फ फिल्म फेस्टिवलों के लिए बनती है। महान निर्देशक होने की स्वीकृति फिल्म फेस्टिवलों के पुरस्कारों से ही मिलती है। अब दर्शक सिर्फ बड़े सितारों पर निर्भर नहीं हैं। खासकर शहरी और युवा दर्शकों में कहानी को प्राथमिकता मिलने लगी है। थिएटर अब सिर्फ इवेंट फिल्मों के लिए भीड़ खींचते हैं, जबकि मध्यम बजट की गंभीर या प्रयोगात्मक फिल्में सिनेमाघरों में टिक नहीं पातीं। लॉकडाउन के दौरान जब लोग महीनों फुरसत में घर बैठे डिजिटल माध्यम पर कंटेंट देखते रहे तो महामारी समाप्त हो जाने के बाद उनकी थियेटर जाने की इच्छा कम हो गई दिखी। उन्हें घर पर ही फिल्में देखने के कई फायदे लगे, मसलन समय की आज़ादी और कम खर्च। नई तकनीक ने व्यक्ति को अपनी मन चाहे समय, अकेले या परिवार के साथ, आरामदायक माहौल में फिल्म का आनंद लेने का विकल्प दिया। थियेटर में हमेशा ही आमतौर पर व्यावसायिक फिल्मों का बोलबाला रहा है, जबकि ओटीटी पर विदेशी सीरीज़ के साथ डॉक्यूमेंट्री, इंडी तथा क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्में तथा प्रयोगात्मक कंटेंट सब कुछ उपलब्ध हो गया। उधर फिल्म निर्माताओं का झुकाव ओटीटी तरफ इसलिए भी हुआ क्योंकि वहां बिना जोखिम के लागत की वसूली हो जाने के अवसर मिलने लगे। जहां थियेटर में फिल्म की किस्मत पहले दिन की कमाई, उसकी स्टार पावर, वर्ड ऑफ माउथ प्रचार, और प्रतिस्पर्धा पर निर्भर होती है वहां ओटीटी प्लेटफॉर्म फिक्स राशि में फिल्में खरीद लेते हैं जिससे एक सामान्य निर्माता बिना किसी बॉक्स ऑफिस जोखिम के शुरुआत में ही अपनी फिल्म के निर्माण की लागत निकाल लेता है। जहां एक ओर बड़े सितारों के बड़े-बड़े भुगतानों से फिल्मों का बजट बढ़ रहा है, वहीं थियेटरों में दर्शकों की संख्या निरंतर घट रही है। ऐसे में छोटे, कम चर्चित व नये कलाकारों को लेकर फिल्में बनाने वाले निर्माताओं के लिए ओटीटी बेहतर सौदा साबित होता है। हर प्लेटफॉर्म नए सब्सक्राइबर्स पाने के लिए एक्सक्लूसिव फिल्में चाहता है। इस प्रतियोगिता में निर्माता का ही लाभ होता है।

नई यंत्र तकनीकी पुराने बॉक्स ऑफिस फ़ॉर्मूलों से मुक्ति दिलाती है। ओटीटी पर फिल्में 'मसाला फ़ॉर्मूला' के दबाव से बच जाती हैं। निर्माता-पटकथा लेखक अब पूरी छूट से मनोवैज्ञानिक थ्रिलर, यथार्थवादी, महिला-केंद्रित तथा डार्क कॉमेडी जैसी फिल्में बना पाते हैं, जिससे छोटे और प्रतिभाशाली अभिनेताओं, लेखकों तथा निर्देशकों को सामने आने और अपनी प्रतिभा दिखने का अवसर मिलता है। इस प्रकार ओटीटी ने बड़े सितारों के वर्चस्व को तोड़ा है। तो क्या सिनेमाघर खत्म हो जाएंगे? यह सवाल अब खूब पूछा जा रहा है। यह कहना तो ठीक नहीं है कि थियेटर खत्म हो रहे हैं, मगर उनकी संख्या जरूर सीमित हो रही हैं। सिंगल स्क्रीन थियेटरों की जगह सितारा होटलों जैसे मल्टीप्लेक्स ने ली है जिनकी टिकट दरें भी सामान्यजन को उनसे दूर रखती है। वहां सिनेमा प्राथमिक नहीं है। वहां खान-पान और सैर-सपाटा प्रमुख है। यह भी पूछा जा रहा है कि क्या अब सिर्फ 'इवेंट सिनेमा' बचेगा? बहुतों को लगता है थियेटर अब मुख्यतः सुपरस्टार फिल्मों, बड़े एक्शन ड्रामा, भव्य ऐतिहासिक फिल्मों या फ्रेंचाइज़ी फिल्मों तक सीमित हो जाएगा। मगर बाज़ार के जानकार कहते हैं कि छोटे शहरों में अभी भी मांग बनी हुई है। कई जगहों पर सिंगल स्क्रीन आज भी चल रहे हैं, लेकिन वहां भी लोग बड़े एक्शन वाली और दक्षिण भारतीय फिल्मों की ओर आकर्षित होते दिखते हैं। मल्टीप्लेक्स की स्पष्ट रूप से अपनी सीमाएं हैं। मल्टीप्लेक्स के संचालक सिर्फ उन्हीं फिल्मों को स्क्रीन देते हैं जो अधिक कमाई करें। ऐसे में छोटी फिल्में पीछे रह जाती हैं और वे अंततः ओटीटी का रास्ता पकड़ती हैं। हम पाते हैं कि बॉलीवुड की कमाई के नये मॉडल में सैटेलाइट अधिकार घट रहे हैं और उनकी जगह भी ओटीटी ले रह हैं। टीवी देखने वालों की संख्या कम हो रही है, इसलिए सैटेलाइट राइट्स की कीमत घट गई है। अब ओटीटी राइट्स फिल्मों का बड़ा वित्तीय सहारा बन गए हैं। ऐसे में फिल्मों के हाइब्रिड रिलीज़ मॉडल सामने आये हैं। पहले थियेटरिकल रिलीज़ के बाद टीवी चैनल राइट्स देने का चलन था। अब कई फिल्म निर्माता जो नया मॉडल अपनाते हैं उसमें सीमित थियेट्रिकल के साथ जल्दी ओटीटी राइट्स, फेस्टिवल प्रीमियर के साथ ओटीटी राइट्स तथा सीधे ओटीटी राइट्स के साथ मांग पर थियेटर रिलीज़ के व्यवस्था होती है। जन संचार के नये माध्यम के रूप में उछलकर सामने आये सोशल मीडिया ने अन्य सभी क्षेत्रों के साथ फिल्मों के प्रचार पर भी प्रभाव डाला है। सोशल मीडिया में हर चीज तुरंत होती है। वहां इंस्टेंट रिव्यू कल्चर चल पड़ा है। इसमें अच्छे और बुरे सभी प्रकार के समीक्षक अपना लिखा जम कर चलाते हैं। यह एक ऐसा अनियंत्रित मीडिया है जहां खराब समीक्षा तुरंत फैल जाती है और फिल्म का बॉक्स ऑफिस गिर जाता है। बहुतों को यह लगता है कि ओटीटी इस जोखिम को कम कर देते हैं। सभी जानते हैं कि डिजिटल मीडिया एल्गोरिथ्म का खेल है और ओटीटी का एल्गोरिथ्म खुद ही फिल्म को लाखों यूज़र्स तक पहुंचाते हुए थियेटर को पछाड़ देता है। थिएटर में दर्शकों की भौतिक उपस्थिति और समय पर फिल्म की सफलता या असफलता तय करती है।

> **यह सही है कि ओटीटी ने ऑडियो-विज़ुअल मनोरंजन को सबके लिए सुलभ बनाया है और विविध आवाज़ों को नया मंच दिया है, मगर यह भी शंका जताई जा रही है कि यह नया गुब्बारा कितने दिन चलेगा और अंततः फटने में कितना समय लेगा? क्या वह डॉटकॉम के गुब्बारे की तरह एकदम धड़ाम हो जाएगा या मनोरंजन की दुनिया में अपनी स्थाई जगह बना लेगा? इन सभी सवालों के जवाब भविष्य के गर्भ में हैं। अभी किसी का मर्सिया पढ़ने का समय नहीं है।**

फिल्म देखने दिखाने की यंत्र तकनीक जनित नई व्यवस्था कुछ नया अनुभव दे रही है तो कुछ पुराना अनुभव हमसे छीन भी रही है। ओटीटी को नापसंद करने वाले कहते हैं कि इससे हम फिल्में देखने का सामूहिक अनुभव खो रहे हैं? थियेटर में एक साथ फिल्म देखना, तालियां बजाना, सीटी बजाना जैसा अनुभव ओटीटी पर संभव नहीं है। दूसरी तरफ थियेटर की विविधता समाप्त हो रही है। सिनेमा स्क्रीन पर ए-ग्रेड, बी-ग्रेड, और सी-ग्रेड तीनों श्रेणियों की फिल्में प्रदर्शन के लिए आती थी। विशेषज्ञ मानते हैं कि जैसे-जैसे छोटी फिल्में ओटीटी पर जा रही हैं, थिएटर केवल बड़े एक्शन और स्टार-फिल्मों तक सीमित होते जा रहे हैं। नये अभिनेताओं के संघर्ष की बात करें तो यह भी सामने आता है कि नये कलाकारों को ओटीटी पर पहचान तो मिल जाती है, पर थियेटर वाला बड़ा सितारा दर्जा पाना अब और मुश्किल बन गया है। ओटीटी पर किसी कलाकार की लोकप्रियता भी स्थाई या लंबी चलने वाली नहीं लगती। ऐसे में मनोरंजन बाज़ार की आर्थिकी पर निगाह रखने वाले विश्लेषक नयी व्यवस्था में हिंदी सिनेमा का दोहरा भविष्य देखते हैं। वे मानते हैं कि फिल्मों की थियेटर रिलीज़ में गिरावट और ओटीटी-एक्सक्लूसिव फिल्मों का उभार एक अस्थायी ट्रेंड नहीं है, बल्कि मनोरंजन उद्योग का स्थायी पुनर्गठन है। उनका मानना है कि आने वाले समय में हिंदी सिनेमा दो रास्तों पर चलेगा। एक सिनेमा थियेटरों के लिये होगा, जो बड़े स्टार, भव्य फिल्मों, हाई-विजुअल ड्रामा और फ्रेंचाइज़ी वाला होगा। और दूसरा ओटीटी के लिए होगा जिसमें यथार्थवादी कहानियां कही जाएगी, जहां माध्यम या कम-बजट की फिल्में होंगी, प्रयोगात्मक कथानक और नये कलाकारों के साथ विविध और निश्चित दर्शन समूहों को रिझाने वाला कंटेंट होगा। यह सही है कि ओटीटी ने ऑडियो-विज़ुअल मनोरंजन को सबके लिए सुलभ बनाया है और विविध आवाज़ों को नया मंच दिया है, मगर यह भी शंका जताई जा रही है कि यह नया गुब्बारा कितने दिन चलेगा और अंततः फटने में कितना समय लेगा? क्या वह डॉटकॉम के गुब्बारे की तरह एकदम धड़ाम हो जाएगा या मनोरंजन की दुनिया में अपनी स्थाई जगह बना लेगा? इन सभी सवालों के जवाब भविष्य के गर्भ में हैं। अभी किसी का मर्सिया पढ़ने का समय नहीं है। मनोरंजन की दुनिया तमाशे की दुनिया होती है। थियेटर का प्रयास यही रहेगा कि वे फिल्मों को उत्सव और भव्यता के साथ प्रदर्शित करते रहें। उनके यहां फिल्मों का प्रदर्शन एक ईवेंट हो जिससे उनकी हैसियत और उनका बॉक्स ऑफिस बना रहे। सिनेमाघरों में और ओटीटी पर प्रदर्शन के लिए फिल्मों के स्वरूप की चुनौती जरूर रहेगी। इन दोनों माध्यमों के बीच संतुलन को बनाए रखना आसान नहीं है क्योंकि मनोरंजन का बाज़ार अपने मुनाफे के अनुरूप नई-नई तकनीकों का विकास करता रहता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

कौन था मैकाले और क्या किया उसने जिसे 200 साल बाद 2035 तक मिटाकर, शून्य कर, ऐतिहासिक औपनिवेशिक अवशेष समाप्त करने हैं

महावीर सिंह

1834 में एक मैकाले (थॉमस बैबिंगटन मैकाले) नाम का अंग्रेज भारत आया था। वह तत्सम्य के ब्रिटिश भारत में, ईस्ट इंडिया कंपनी के सर्वोच्च अंग्रेज अधिकारी गवर्नर जनरल की कौंसिल में कानूनी व शैक्षणिक मुद्दों पर सलाहकार, सदस्य की हैसियत से आया था।

वर्तमान में देश के कई ख्यात नाम राजनेताओं, संगठनों ने यह आव्हान किया है कि 2035 में मैकाले के भारत में आने की घटना को 200 वर्ष हो जाएंगे। उसने हमारी सांस्कृतिक विरासत, शैक्षणिक कानूनी पद्धतियों को, इतिहास को जो नुकसान पहुंचाया, विकृत किया उसे समाप्त करना है।

मैकाले ने भारत में, मुख्य रूप से, दो काम किए --एक था न्याय व्यवस्था के सुव्यवस्थितीकरण के लिए इंडियन पीनल कोड (दंड संहिता), सी आर पी सी (क्रिमिनल प्रोसीजर कोड), सिविल प्रोसीजर कोड के मसौदे (ड्राफ्ट) तैयार किए जो कालांतर में कानून बने। इन कानूनों से पहले अपराधिक विवादों के निर्णय, अलग-अलग राज्यों - क्षेत्रों में धर्म शास्त्रों के आधार पर होते थे। दंड कई शास्त्रों के अनुसार जाती आधारित भी होते थे। अंग्रेजों द्वारा बनाए कानूनों के बाद ब्रिटिश भारत के क्षेत्रों में एकरूपता व स्पष्टता आ गई। इस से किसी को क्या नुकसान हुआ?

> ■ **वर्तमान में देश के कई ख्यात नाम राजनेताओं, संगठनों ने यह आव्हान किया है कि 2035 में मैकाले के भारत में आने की घटना को 200 वर्ष हो जाएंगे। उसने हमारी सांस्कृतिक विरासत, शैक्षणिक कानूनी पद्धतियों को, इतिहास को जो नुकसान पहुंचाया, विकृत किया उसे समाप्त करना है। मैकाले ने भारत में, मुख्य रूप से, दो काम किए - एक था न्याय व्यवस्था के सुव्यवस्थितीकरण के लिए इंडियन पीनल कोड (दंड संहिता), सी आर पी सी (क्रिमिनल प्रोसीजर कोड), सिविल प्रोसीजर कोड के मसौदे (ड्राफ्ट) तैयार किए जो कालांतर में कानून बने।**

हां, कुछ धर्म शास्त्रों के अनुसार न्याय करने वाले न्याय अधिकारियों के अधिकार जरूर कम हुए। भारत के अधिसंख्य 80 प्रतिशत गरीब, मजदुर, किसान, रेहड़ी-ठेले वालों, छोटे दुकानदारों, दलित, पिछड़े, आदिवासियों का तो अंग्रेज शासन में बने इस प्रकार के कानूनों से कोई अहित हुआ नहीं।

स्वतंत्रता के बाद भारत की संसद ने इन कानूनों में, आवश्यकता के अनुरूप, समय समय पर संशोधन किए हैं। वर्तमान सरकार ने तो इन तीनों कानूनों की जगह नए नामों से, कुछ अपराधों की धाराओं की संख्या में परिवर्तन करके और कुछ ठोस परिवर्तन करके, नए कानून बना दिए। वैसे इसमें कुल मिला कर यह सारी कवायद पुरानी शराब नई बोतल वाली सी बात है। हमारी संसद ने इस कवायद से पहले भी अनेक नए अपराधिक कानून बनाए है, कई कानूनों में संशोधन किए है, कई अप्रासंगिक हुए कानूनों के निरस्त किया है। इस प्रकार मैकाले की इस आधार पर तो आलोचना का कोई बिंदु नहीं बनता।

अब आते दूसरे बिंदु पर। शिक्षा के क्षेत्र में उस के द्वारा गवर्नर जनरल को दिए सुझाव व उनका क्रियान्वयन करण। उन पर आरोप है कि उन्होंने शिक्षा के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आलोचक कहते है मैकाले ने तत्सम्य की भारतीय शिक्षण पद्धतियों, भारतीय संस्कृति और भारतीय शास्त्रों में वर्णित ज्ञान भंडार को लुप्त करने कराने की शुरुआत की। इतना ही नहीं उसने शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी भाषा रखने की अनुशंसा की जिसे माना गया।

आगे विचार करने से पहले यह जानना जरूरी है कि अंग्रेजों के आने से पहले, प्राचीन काल से मैकाले से पूर्व भारत में शिक्षा व्यवस्था क्या थी? एक काल मुस्लिमों के सत्ता में आने से पहले का है और दूसरा इस के बाद का।

प्राचीन भारत में प्रारंभिक, प्राथमिक शिक्षा के लिए विभिन्न छोटे-बड़े राज्यों में राज्यों द्वारा क्या कोई व्यवस्था थी, इसका कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिलता। इस स्तर की शिक्षा की व्यवस्था का जिम्मा ग्राम, शहर स्तर पर मुख्यत पढ़ें लिखे ब्राह्मणों या कुछ दूसरे पढ़े-लिखे लोगों का था। यह लोग या तो अपने निवास पर या समुदाय द्वारा उपलब्ध स्थान पर या मंदिरों, मठों में बालकों को पढ़ाते थे। इनके भरण पोषण का जिम्मा या तो ग्राम, मोहल्ला, टोला निवासी करते थे या कोई सेठ साहूकार करते थे या कहीं-कहीं बड़े जमींदार, जागीरदार या राज्य ऐसे लोगों को निःशुल्क कृषि भूमि देते थे जो सामान्यत माफी भूमि कहलाती थी। इस प्रकार दी गई भूमियों को कहीं-कहीं अग्रहार भी कहा जाता था।

उपरोक्त के अतिरिक्त कुछ गुरुकुल भी होते थे। उन्हें वर्तमान की स्कूलों की तरह स्कूल समझा जा सकता है। इनमें अधिकतर एक गुरुजी ही अध्यापन का दायित्व निभाते थे। युद्ध कोशल, व्यापारिक तरीकों की सिखलाई आदि के लिए अलग गुरुकुल होते होंगे। इन गुरु कुलों में, गुरु रहते थे और वहां पर दूर-दूर से विद्यार्थी आते थे, वहीं ठहरते थे पढ़ाई करते थे, अपना स्वयं का काम करते थे और गुरु की भी उनके घरेलू कार्यों में करते थे।

क्या पढ़ाया जाता था??

उपरोक्त स्थानों पर मुख्य रूप से हिंदू धर्म शास्त्रों (वेद, स्मृति उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ इत्यादि, व्रत - त्यौहार - पूजा पाठ विधि आदी), बौद्ध, जैन धर्म शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन होता था। पढ़ाई का तरीका मुख्यत बोलना, सुनना, सुनाना था। दर्शन शास्त्र, नीति शास्त्र, प्रारंभिक गणित, आयुर्वेद, वस्तु शास्त्र, योग, संगीत, चित्रकला, खगोल विज्ञान, व्याकरण, धनुर्विद्या, युद्ध कला, शारीरिक शिक्षा, अर्थशास्त्र, नैतिक आचरण इत्यादि पढ़ाए जाते थे। पाठ्यक्रम लचीले थे, उसमे व्यवहारिक अनुभव आदि सभी विषय होते थे। कुछ विषयों के लिए जैसे युद्ध कोशल, धनुर्विद्या, आयुर्वेद आदि के लिए बड़े जागीरदार, राजा लोग पाठशालाएं, गुरुकुल जरूर वित्तपोषित करते होंगे क्योंकि इन में इस प्रकार के विशिष्ट लोगों की ही रुचि रहती होगी, सामान्य आदमियों की नहीं।

मुस्लिमों के आने के बाद इस्लामिक धर्म व व्यवहारिक विषयों आदि की शिक्षा मुसलमान फकीरों, मौलवियों द्वारा दी जाती थी। कहीं-कही दूर-दूर से विद्यार्थी आकर एक स्थान पर पढ़ते थे, उन स्थानों को मुख्यत मदरसा कहा जाता था। यहां मुख्यत मुस्लिम धर्म से जुड़ी बातें सिखाई जाती थी। इसमें कुरान, हदीस, शरीयत, गणित, विज्ञान, तर्क, इस्लामिक इतिहास, चिकित्सा आदि विषय पढ़ाए जाते थे। और इसके अतिरिक्त मोटा-मोटा मुस्लिम कानून, सामाजिक ज्ञान, सुलेख (कैलीग्राफी) आदि पढ़ाए जाते थे। मदरसों में शिक्षा का माध्यम मुख्यत अरबी, फारसी, उर्दू होता था। मदरसों में बंगाली, अंग्रेजों के आने के बाद अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती थी।

सही है, प्राचीन भारत में शिक्षा के कुछ बड़े, विश्व प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र, विश्व विद्यायल भी थे। मौर्य काल में तक्षशिला, गुप्तकाल में नालंदा, उज्जैन, विक्रमशिला शिक्षा के बड़े केंद्र थे। इन विश्व विद्यालयों में चीन आदि बाहर के देशों से लोग पढ़ने, सीखने, पढ़ाने आते थे। यह भी सही है कि 7वी ईस्वी सदी से पहले के कुछ महान गणितज्ञ, खगोल व ज्योतिष विज्ञान में पारंगत प्रसिद्ध विभूतियां भारत में हुई है जैसे- आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, वराह मिहिर आदि। शून्य व दशमलव प्रणाली की अवधारणा, बीज गणित, त्रिकोणमिति, ग्रहों की गति गणना आदि क्षेत्रों में इन विभूतियों का बड़ा योगदान है।

अब यहां एक प्रश्न उठाया जाना जरूरी है कि 7वी सदी के बाद के काल खंड की चर्चा करें तो उस दौरान शेष विश्व के कई देशों में कई नई क्रांतिकारी खोजें हुए, विचार उभरे तो भारत में जो शिक्षा का स्तर था उसने आम आदमी को क्या दिया? विश्व में इस काल खंड में कागज आया, प्रिंटिंग प्रेस आई, बारूद आई, साहसी लोगों में जान जोखिम में डाल के समुद्री यात्राएं कर अमरीका जैसा नया संसार खोजा, सस्ते व्यापार के लिए भारत जैसे देशों के लिए नए समुद्री व्यापारिक मार्ग ढूंढे। जब पश्चिम, मध्य एशिया, चीन आदि देशों में यह सब हो रहा था, भारत में क्या नई खोजें हुई?

मैकाले की आलोचना के प्रमुख बिंदु -----

मैकाले की योजना थी कि सीमित संसाधनों के चलते पहले उच्च वर्ग को अंग्रेजी शिक्षा दी जाए। यह लोग पाश्चात्य ज्ञान आम जनता तक पहुँचा सके। ब्रिटिश प्रशासन के लिए जनता और शासन के बीच संवाद आसान बना सकें यानि क्लर्क तैयार हो सकें। आलोचकों द्वारा एक प्रमुख वाक्य यह कहा जाता है कि उनकी चाल थी कि भारतीयों में से एक ऐसा वर्ग तैयार करें जो रक्त और रंग से तो भारतीय हो लेकिन स्वाद, विचार और बौद्धिकता से अंग्रेजों जैसा हो।

वैसे जो भी बाहर से भिन्न भाषी शासक आए उन्हें ऐसे व्यक्तियों की सदैव आवश्यकता होती है जो उनकी बात आवाम को और आवाम की बात शासकों तक पहुंचा सके। केवल इसके लिए मैकाले की आलोचना का कोई ठोस कारण नहीं बनता। आज भी भिन्न-भिन्न देशों में लोग भिन्न-भिन्न भाषाएं पढ़ते-पढाते है। भिन्न देशों के मध्य राजकाज व्यापारिक रिश्तों, विचारों के आदान-प्रदान के लिए दुभाषिए रखे जाते है।

मैकाले के बाद 1854 में वुड्स डिस्पैच (जिसे आधुनिक भारतीय शिक्षा का चार्टर कहा जाता है) में उनकी नीतियों को स्पष्ट रूप से लागू किया गया। इसमें यह सिफारिश हुई कि जन सामान्य तक शिक्षा पहुंचना तत्सम्य की अंग्रेज सरकार के हित में है और सरकार की प्राथमिकता होगी। प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं, माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं में होगी। महिला शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, शिक्षकों के प्रशिक्षण की, निजी विद्यालयों को प्रोत्साहन की बात की गई। कंपनी स्कूलों में शिक्षा धर्म निरपेक्ष होगी। इसके बाद ही बंगाल, मद्रास, बॉम्बे में एक एक विश्व विद्यालय खोले गए।

मैकाले व वुड्स सिफारिशों के बाद मुख्यत हंटर आयोग ने क्या सिफारिशें की जो शिक्षा के संबंध में लागू हुई??

मैकाले व वुड्स की सिफारिशों के बाद भारत के अंग्रेज गवर्नर रीपन ने 1882 में सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया। आयोग का मुख्य कार्य मैकाले व वुड्स डिस्पैच की सिफारिशों के बाद शिक्षा क्षेत्र की व मुख्य रूप से प्राथमिक शिक्षा की स्थिति की समीक्षा करना था।आयोग को प्राथमिक शिक्षा के विस्तर के सुझाव देने थे। मिशनरियों के रोल पर भी सुझाव देने के लिए भी कहा गया था।

जिसने प्राथमिक शिक्षा के विस्तार, व्यावसायीकरण और स्थानीय निकायों की भागीदारी की सिफारिश की थी।

आयोग की सिफारिशें ::-- प्राथमिक शिक्षा का विस्तार करने, इसे अनिवार्य और निःशुल्क बनाने की सिफारिश, की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की संख्या बढ़ाने का सुझाव। शिक्षा क्षेत्र में नगर पालिकाओं और जिला बोर्डों की भूमिका बढ़ाने की सिफारिश की गई। शिक्षा को व्यावहारिक बनाने के लिए भौतिकी, कृषि जैसे विषयों को पढ़ाने की सिफारिश की गई। महिलाओं और निचले वर्गों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना और उनके लिए अलग स्कूल खोलने की बात कही। मिशनरियों के बजाय निजी भारतीय संस्थाओं को उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी सौंपने पर जोर दिया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि मैकाले से लेकर हंटर तक जो सिफारिशें शिक्षा के क्षेत्र में लागू हुई उनसे तर्क आधारित शिक्षा का विस्तार व सार्वजनिक करण हुआ। यूरोप में भी 12,13 वी सदी से पूर्व, शिक्षा सीमित सामंत, धनिक वर्ग के लोगों तक सीमित थी। धार्मिक ग्रंथों पर आधारित शिक्षा का ही बोलबाला था। यूरोपियन पुनर्जागरण से ही, वहां तर्क, विज्ञान आधारित शिक्षा का विस्तार हुआ, साहित्य - राजनीति शास्त्र समाज विज्ञान - तथ्य और तर्क आधारित इतिहास लेखन आदि विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कोटि का लेखन हुआ। भारत में भी उपनिवेशन काल में ही उत्कृष्ट कोटि के गोदान जैसे कई उपन्यास, कहानियों का लेखन हुआ। कई ख्यातनाम इतिहास कार हुए।

एक अन्य आरोप लगता है कि मैकाले की शिक्षा से निकले इतिहासकारों ने हमारे इतिहास को तोड़मरोड़ कर तथ्यों के विपरीत ब्रिटिशर्स व उसके बाद कांग्रेस की इच्छानुसार लिखा गया:: --

सही है, इस काल में, मात्र राजाओं, सामंतों की अतिरंजित प्रशंसाओं के इतिहास लेखन से हटकर तथ्यों का तर्क के आधार पर गहन परीक्षण कर इतिहास लेखन विकसित हुआ। इसको लेकर कुछ लोग हमेशा विचलित, असहज दिखने लग जाते है। ऐसे लोग, ऐसे संगठन मात्र अपनी इच्छाओं के अनुसार, राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए इतिहास लेखन चाहते है।

> ■ **मैकाले के बाद 1854 में वुड्स डिस्पैच में उनकी नीतियों को स्पष्ट रूप से लागू किया गया। इसमें यह सिफारिश हुई कि जन सामान्य तक शिक्षा पहुंचना तत्सम्य की अंग्रेज सरकार के हित में है और सरकार की प्राथमिकता होगी। प्राथमिक शिक्षा क्षेत्रीय भाषाओं, माध्यमिक शिक्षा अंग्रेजी व क्षेत्रीय भाषाओं में होगी। महिला शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, शिक्षकों के प्रशिक्षण की, निजी विद्यालयों को प्रोत्साहन की बात की गई**

क्या हम इन तथ्यों से इनकार कर सकते है कि भारत में पिछले लगभग 3 हजार साल से लगातार भिन्न जातियों के लोग आकर बसते रहे हैं। विभिन्न विदेशी आक्रमणकारी भारत में आए। कुछ लूटपाट कर के लौट गए, कुछ यहीं के होकर रह गए। भारत के इतिहास का तथ्यों पर आधारित सत्य है कि कई विदेशी आक्रमणकारियों को यहीं के राजाओं, सामंतों ने आमंत्रण दिया था, सहायता की थी। लगता है कुछ लोग इस बात से असहज होते है। क्या मोहमद गौरी को आमंत्रण नहीं दिया गया? क्या खनवा के युद्ध में महाराणा सांगा ने अदम्य वीरता का परिचय दिया किंतु हारे? ओर बहुत सी बातों के साथ-साथ, ऐसे लोग हल्दी घाटी के युद्ध का भी पुनर्लेखन चाहते है। उनकी इच्छानुसार लिखा जाए कि इस युद्ध में महाराणा प्रताप विजई हुए। महाराणा प्रताप निश्चित रूप से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ रहे थे। लड़ाई एक द्वारा साम्राज्य विस्तार व दूसरे द्वारा अपने राज्य की रक्षा की थी। बहुत से हिंदू राजा अकबर के साथ थे। वीर शिवाजी की वीरता, युद्ध कला की भूरी-भूरी प्रशंसा इतिहासकारों ने की है। यह मात्र उदाहरण है।

ले-देकर ऐसे लोगों, संगठनों का इतिहास लेखन में स्थानों, मार्गों, इमारतों के नाम बदलने, पुरानी ऐतिहासिक धरोहरों के साथ छेड़छाड़ करने, पुस्तकों में से उनके लिए असहज अंशों को हटा देना, अस्पष्ट - अप्रमाणित तथ्यों को जोड़ देने आदि से अधिक कुछ नहीं होता।

भारतीय संस्कृति के अपमान की थ्योरी: आलोचकों के अनुसार मैकाले ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को तुच्छ, पूर्णतः बेकार बताया, जिससे भारतीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान की उपेक्षा हुई। उनके हवाले कहा जाता है– भारतीय साहित्य, किसी अच्छी यूरोपियन लाइब्रेरी की एक अलमारी में रखे अंग्रेजी साहित्य जितना मूल्य नहीं रखता।

कुछ लोग तथा संगठन समय-समय पर मैकाले को आगे रख कर यह आरोप लगते है कि उसके द्वारा शुरू शिक्षा के कारण हमारा इतिहास, संस्कृति प्रदूषित हुए। भारत के मूल्यों को भूलकर सदैव पश्चिमी नजरिए से भारत की समस्याओं का समाधान खोजते है। इतिहास के बारे में उपर चर्चा की। आइए अब देखें कि ब्रिटिशर्स ने जो शिक्षा का प्रसार किया, धर्मनिरपेक्ष करण किया उस से हमारी संस्कृति कैसे नष्ट हुई?

क्या भारतीयों ने अपने तीज त्योंहार मानने - मनाने छोड़ दिए, विभिन्न प्रकार की देव पूजा, वृक्ष पूजा, जल स्त्रोतों, नदियों का पूजन बंद कर दिया? क्या तीर्थाटन बंद कर दिया, क्या मंदिरों में जाना छोड़ दिया, क्या विभिन्न अवसरों पर घरों - मंदिरों में होने वाले पूजा-पाठ बंद हो गए, क्या उतर भारतीयों ने दक्षिण के और दक्षिण के लोगों ने दक्षिण, उतर में स्थित पवित्र स्थलों पर आना-जाना छोड़ दिया?? क्या अंग्रेजों ने यहां के धार्मिक, दार्शनिक ग्रंथों, अन्य ग्रंथों को नष्ट, प्रतिबंधित किया? फिर अंग्रेजों द्वारा जो शिक्षा देनी प्रारंभ की उस से यहां के साहित्य, संस्कृति की अवनति कैसे हुई? उल्टा, उस शिक्षा के कारण तो हिन्दू धर्म में सुधारों के आंदोलन प्रारंभ हुए जिनके बहुत सुखद परिणाम निकले। बल विवाहों को बंद करने की मांग उठी, विधवा विवाह के स्वीकृति की मांग उठी, सती प्रथा को समाप्त करने का कानून बना। धार्मिक पाखंडों के विरुद्ध आर्य समाज, ब्रह्म समाज जैसे व अन्य कई संगठन बने और इन पाखंडों का विरोध करने आगे आए। ईश्वर चंद्र विद्यासागर, राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती व अनेक अन्य महान विभूतियों ने पाश्चात्य ढंग से ही तर्क आधारित शिक्षण से ही समाज सुधार व अन्य क्षेत्रों में बड़े-बड़े काम किए।

एक ओर बात बार बार कुछ उच्च पदों पर बैठे लोग कहते रहते है कि हमारे वेदों उपनिषदों में अब कुछ पहले से लिखा हुआ है। होगा, किंतु इस से आम गरीब, किसान, मजदूर, दलित आदि वर्ग के आदमी क्या भला होता है। यदि इन पुस्तकों में अथाह ज्ञान छिपा है तो उस प्रविचार करें, शोध करे उस ज्ञान को विश्व के सामने रखे। उससे आदमी की रोजी-रोटी, शिक्षा, स्वास्थ्य की समस्याओं का समाधान करें।

ब्रिटिशर्स आए उसके बाद उस समय के सबसे बड़े लोग यथा राजा, सामंत, धनिक वर्ग के लोगों के वारिश ही पश्चिमी शिक्षा के लिए पश्चिमी देशों में गए। उन में से कई बड़े व्यापारी बने, उन में से कई राजनीति के क्षेत्र में आए और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय हिस्सेदारी निभाई। कईयों में स्वतंत्र भारत में बड़े पदों पर रहकर लोकतंत्र की जड़े मजबूत करने में, देश को खुशहाली और प्रगति पथ पर बढ़ाने वाली की अनेक योजनाएं बनाई और क्रियान्वित की।

सोचने की बात यह है कि गरीब, दलित, पिछड़े वर्ग के लोगों की संताने तो पश्चिम में शिक्षा के लिए इंग्लैंड आदि देशों में गए नहीं। देश के बाहर जाकर ऐसे लोगों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सोचना बहुत दूर की कौड़ी थी तो फिर इतिहास, संस्कृति विकृत हुई भी तो की किसने ????

–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 17 दिसम्बर, 2025

पौष मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, विशाखा नक्षत्र सायं 5:11 तक, सुकर्मा योग दिन 2:17 तक, गर करण दिन 1:15 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 10:26 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-तुला, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज अमृतसिद्धि योग सायं 5:11 से सूर्योदय तक है। सर्वार्थसिद्धि योग सायं 5:11 से आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 2:33 से आरम्भ होगी। आज प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:48 तक, शुभ 11:05 से दिन 12:23 तक, चर 2:57 से 4:15 तक, लाभ 4:15 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:13, सूर्यास्त 5:32 तक

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह से अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

वृष
परिवार में स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक आर्थिक समस्या हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।